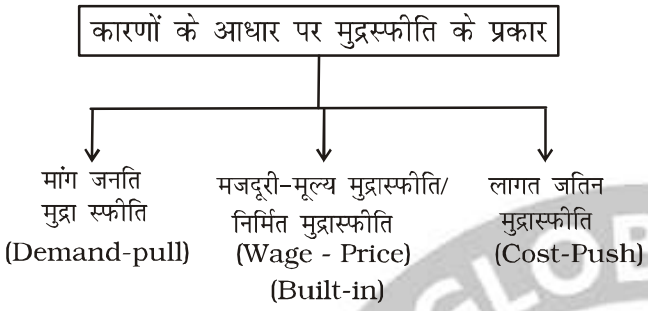

1. माँग जनित मुद्रस्फीति (Demand Pull Inflation)

(i) बढ़ती अर्थव्यवस्था या मुद्रा-आपूर्ति में वृद्धि–
जब किसी देश की अर्थव्यवस्था बढ़ती है अर्थात विकास की ओर होती है तब वहाँ मुद्रा आपूर्ति अधिक पायी जाती है, जिसके कारण लोगों की माँग बढ़ती है और कीमत-स्तरों में वृद्धि होती है।

(ii) सस्ते बैंक ऋण–
इसके कारण लोग बैंकों से ऋण अधिक लेते हैं, जिससे उनके पास मुद्रा आपूर्ति बढ़ती है।

(iii) विदेश मुद्रा भण्डार में वृद्धि–
जब किसी देश में अधिक विदेशी मुद्राओं का प्रवाह बढ़ता है, जिससे मुद्रा-आपूर्ति भी बढ़ती है।

(iv) अधिक सरकारी व्यय–
इसके कारण सरकार अधिक से अधिक मुद्रा को व्यय करेगा, जिससे लोगों की मुद्रा की आपूर्ति में वृद्धि होगी।

(v) राजकोषीय प्रोत्साहन (Fiscal Stimulas)–
इसका अभिप्राय है कि जब देश में मुद्रा आपूर्ति कम हो जाती है, जिससे उत्पादनशील गतिविधियाँ कम होने लगती हैं, तब सरकार एकमुश्त राशि को देश में विभिन्न क्षेत्रों को आवंटित करती है। जिससे लोगों के पास अधिक मुद्रा का सृजनन होता है एवं उनकी माँग में वृद्धि होती है।
इसे अर्थशास्त्र में हेलीकॉप्टर मुद्रा भी कहते हैं।

(vi) मुद्रा का मूल्यह्रास / रुपये में गिरावट–

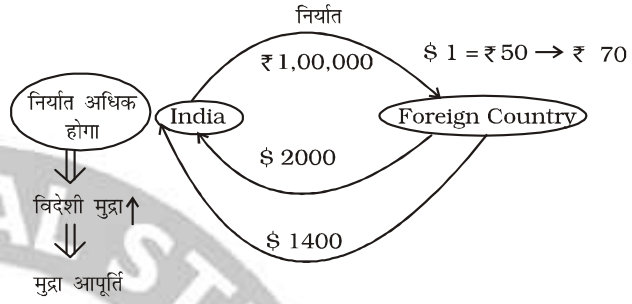

(vii) कर दरों में गिरावट–

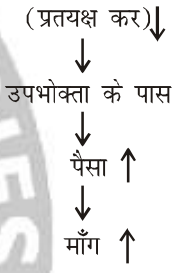

(viii) बचत में कमी–जब लोगों की बचत कम होती है तब देश में उनके व्यय बढ़ने के कारण अधिक तरलता उत्पन्न होती है।

(ix) काला धन / नकली मुद्रा (समानान्तर अर्थव्यवस्था)
–काले धन का अभिप्राय है जिस धन पर लोगों ने सरकार को कर न दिया हो अर्थात् अत्यधिक काले धन से देश में अधिक मुद्रा की आपूर्ति होती है एवं एक समानांतर अर्थव्यवस्था जन्म लेती है।

(x) जनसंख्या में वृद्धि–अधिक लोग होने के कारण अधिक मांग होती है एव मुद्रास्फीति ↑

(xi) घाटे का वित्तपोषण (Deficit Financing)– इसका अभिप्राय है जब सरकार के व्यय राजस्वों से अधिक हो जायें, जिससे सरकार की घाटे की अवस्था उत्पन्न होती है एवं इसके समाधान हेतु सरकार-

(a) RBI से नये नोट जारी करवाना।

(b) मुद्रा (अधिक) उधार लेना / ऋण लेना।

2. लागत जनित मुद्रास्फीति

(i) **उत्पादन साधनों के मूल्य में वृद्धि**–जब भूमि की किराया / लगान, श्रम के पारिश्रमिक/ मजदूरी आदि की कीमतों में वृद्धि होती है, जिससे उत्पादक को वस्तुओं के उत्पादन लागत में वृद्धि होती है, जिससे वह अपने वस्तु की कीमतों में वृद्धि करता है।

(ii) **वस्तुओं की जमाखोरी (Hoarding)**–जब एक उत्पादक वस्तुओं के उत्पादन के बाद उनको बाजार न ले जाकर अपने पास रख लेता है, जिससे बाजार में वस्तुओं की दुर्लभता आपूर्ति कम होती है, जिससे कीमत-स्तर बढ़ती है। इसे कृत्रिम कमी भी कहते हैं।

(iii) **दोषपूर्ण आपूर्ति श्रृंखला / आपूर्ति शॉक / मार्गाविरोध मुद्रास्फीति/ Bottleneck Inflation / संरचनात्मक मुद्रास्फीति**–यह जब उत्पन्न होती है जब देश में आपूर्ति अचानक से कम हो जाये एवं मांग समान रहे। इसके कारण निम्नलिखित हैं-

(i) ऊर्जा के स्रोत का अभाव ।

(ii) प्रतिकूल मौसम।

(iii) उत्पादन के पुराने साधनों की उपलब्धता अर्थात् नवाचार उत्पादन की तकनीकि का अभाव।

(iv) **करों (अप्रत्यक्ष) में वृद्धि**–जब सरकार अप्रत्यक्ष कर जैसे-GST को बढ़ा देती है, जिससे उत्पादक अपनी वस्तुओं की कीमतों को बढ़ाता है।

(v) **मुद्रा का मूल्यह्रास**– इसके कारण देश के उत्पादकों को विदेशों से करने वाला आयात महँगा पड़ता है, जिससे उत्पादन लागत में वृद्धि होती है।

$ 1 = ₹ 50

$ 1 = ₹ 70

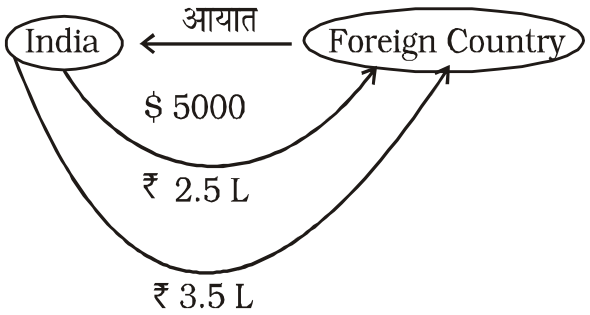

(vi) **कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि**–जब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि होती है, जिसके कारण आयात महंगा हो जाता है एवं इसके परिणामस्वरूप उत्पादन लागत में वृद्धि होती है।

इसे आयातित मुद्रास्फीति (Imported Inflation) भी कहते हैं।

(vii) **श्रम के परिश्रमिक में वृद्धि (अधिक आय)–** जब श्रमिकों को मजदूरी/परिश्रमी बढ़ती है तब उत्पादक की उत्पादन लागत भी बढ़ती है।

3. मजदूरी-मूल्य मुद्रास्फीति/निर्मित मुद्रास्फीति

जब वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि होती है तब श्रमिक अधिक आय की मांग करते हैं एवं मुद्रास्फीति बढ़ने से आय का स्तर बढ़ता है, एवं इससे पुनः मुद्रास्फीति उत्पन्न होती है यह अर्थव्यवस्था में आंतरिक रूप से लगातार चलता रहता है।

इसे Spiral Inflation भी कहते हैं।

मु॰ ↑ ⟶ आय ↑ — मु॰ ↑ ⟶ आय ↑

●●●